अक्रम यूथ

दिसम्बर 2018 | हिन्दी

दादा भगवान परिवार

₹20

विनय

Dada's Youth Network

संपादकीय

दोस्तों, जब भी हम कुछ प्राप्त करने, सफलता के शिखरों तक पहुँचने या जीवन में छोटे-बड़े प्रसंगों में आनंद प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं तब सफल एवं महान पुरुषों ने उनके जीवन में ऐसा तो क्या किया था? वह जानने का प्रयत्न करते हैं। उनके जीवन चरित्र को पढ़ने से हम उनकी सफलता की कुंजियों को जान पाते हैं। उनमें से एक कुंजी है - उनके द्वारा विकसित किए गए गुण। इन गुणों में से एक गुण है - "विनय," जिसके बारे में हम इस अंक में बात करेंगे। विनय अर्थात् क्या? हमारे जीवन पर उसका क्या असर पड़ता है? और महान पुरुषों ने इस गुण को कैसे विकसित किया, वह जानेंगे। दादाश्री की दृष्टि में विनय अर्थात् क्या? अविनय से विनय की ओर कैसे जा सकते हैं और अपने सपनों को पूरा करके आनंदपूर्वक जीने के लिए विनयी कैसे बन सकते हैं, यह जानेंगे, आनंद उठाएँगे और जीवन के हर एक मोड़ पर दादाश्री के बताए हुए रास्ते पर चलने का प्रयास करेंगे।

- डिम्पल मेहता

दिसम्बर २०१८
वर्ष : ६, अंक : ८
अखंड क्रमांक : ६८

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org
store.dadabhagwan.org/akram-youth

संपादक : डिम्पल मेहता

Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Printed at : Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.
Gujarat.
Total 24 Pages with Cover page

Subscription
Yearly Subscription
India :200 Rupees
USA: 15 Dollars
UK: 12 Pounds
5 Years Subscription
India : 800 Rupees
USA: 60 Dollars
UK: 50 Pounds
In India, D.D. / M.O. should be drawn
in favour of "Mahavideh Foundation"
payable at Ahmedabad.

© 2018, Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved

अनुक्रमणिका

04 पोल

05 विनय अर्थात् क्या?

06 विनय अलग-अलग धर्मों में।

08 दादाश्री के पुस्तक की झलक

10 उल्टी पतीली।

12 विनय के फायदे-अविनय के नुकसान

14 Q & A

15 अविनय कहाँ-कहाँ करते हैं?

16 अविनय से विनय की ओर

18 ज्ञानी पुरुष का परम विनय

21 विनय या अविनय?

22 माथापच्ची

पोल

चलो जानें "विनय अर्थात् क्या?" बुजुर्गों, युवाओं एवं ज्ञानी की दृष्टि से।

बुजुर्गों की दृष्टि से विनय

नम्रतापूर्वक बात करना।
सरल बनना।
बुजुर्गों की आज्ञा में रहना।
अधीनता ही विनय है।
सब के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना।
सामने वाली व्यक्ति के कहे अनुसार करना अर्थात् विनय।
दूसरों को मान देना।
आदर सत्कार करना।

यूथ की दृष्टि से विनय

किसी भी जीव को किंचित्मात्र भी दुःख न देना।
बुजुर्गों की सेवा करना।
किसी ने हमें जो काम दिया है उसे सुनना और करना।
किसी की भी अवगणना न करना।
तिरस्कार नहीं करना।
अप्रिय लोगों का पॉज़िटिव देखना।
हमें दिया गया काम दिल से करना।
किसी को छोटा नहीं मानना।
अहंकार रहित व्यवहार।
छोटी व्यक्ति का विवेक रखना और सब को मान देना।

ज्ञानी की दृष्टि से विनय अर्थात् क्या?

प्रश्नकर्ता : विनय अर्थात् क्या? क्या अच्छे रहन-सहन को विनय कहा जाता है?

दादाश्री : हाँ, ठीक है। रहन-सहन तो बहुत छोटी चीज़ है, साधारण व्यवहार भाषा में इसका इस्तेमाल करते हैं। विनय तो धर्म के लिए है। विनय आत्मा के लिए, अध्यात्म के लिए रहता है और भौतिक के लिए विवेक। व्यवहार में विनय नहीं रहता। लोग विवेक की जगह विनय बोलते हैं।

विनय अर्थात् क्या?

विनय अर्थात् अपने अहंकार को डाउन रखे। किसी भी छोटे या बड़े व्यक्ति के सामने मैं कुछ हूँ, मुझे इससे ज्यादा आता है, ऐसे भाव ही न रखे।

जिसे हमेशा अन्य व्यक्ति के पॉज़िटिव पोइन्टस् उसके गुण दिखाई दे और खुद से निम्न नहीं माने वह विनय है।

खुद से कम पढ़ा-लिखा हो तो उसके अन्य सद्गुण ढूँढ़ निकालने की दृष्टि, छोटा बच्चा हो तो उसकी लघुत्तमता और निखालसता देखकर खुद उससे भी लघुत्तम बन जाए। अपना अहंकार इस हद तक लघुत्तम बना दे कि बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक को अपना ही लगे, वह विनय है।

विनय ऐसा भाव है जो शायद वर्तन में न दिखे लेकिन समझ और दृष्टि में दिखाई दे। ऐसी लघुत्तम दशा, जो कैसी भी नेगेटिव व्यक्ति में से पॉज़िटिव ढूँढ निकाले।

"विनय अर्थात् विशेष समझ।"

सामान्य व्यक्तियों की तुलना में कुछ अलग ही उसकी दृष्टि रहती है। विशेष रूप से जगत् को देख सकता है और समझ सकता है। चाहे जितना उच्च पद प्राप्त करे, फिर भी हर एक के प्रति समान दृष्टि और खुद उसमें ही समा जाता है।

विनय अर्थात्
और कुछ नही,
सिर्फ सही समझ।

विनय
अलग-अलग धर्मों में।

इस लेख में हम जानेंगे कि अलग-अलग धर्मों में विनय को कितना महत्व दिया गया है।

भगवान बुद्ध के समय की बात है। वे चातुर्मास कर रहे थे और रोज़ घर-घर भिक्षा माँगने जाते थे। एक ब्राह्मण उनसे बहुत चिढ़ता था। उसके कर्मकांड की आमदनी कम हो रही थी। उसने अपनी पत्नी से कहा था कि बुद्ध घर पर आए तो उसे भिक्षा में कुछ मत देना। दूसरे दिन बुद्ध ब्राह्मण के घर आ पहुँचे। ब्राह्मण की पत्नी ने उन्हें नमस्कार करके विवेकपूर्वक कहा, "आपको देने के लिए आज मेरे घर में कुछ भी नहीं हैं। बुद्ध शांतिपूर्वक चले गए। तीन दिनों तक यही चलता रहा। जब चौथे दिन भी बुद्ध उस ब्राह्मण के घर भिक्षा लेने पहुँचे तब ब्राह्मण गुस्से में घर से बाहर आया और बुद्ध से कहा, "तीन दिनों से मेरी पत्नी आपको भिक्षा देने से मना कर रही है, फिर भी आप मेरे घर पर क्यों आते हैं? आपको "ना" का अर्थ समझ में नहीं आता? आपको शर्म नहीं आती?" भगवान बुद्ध ने बहुत शांतिपूर्वक जवाब दिया, "हे ब्राह्मण, तुम्हारी पत्नी जिस नम्रता से, जिस विवेक से और जिस समझदारी से मुझे "ना" कहती थी उस "ना" को सुनने के लिए मैं बार-बार आता था। भगवान बुद्ध को तो ब्राह्मण पत्नी की मधुरता से भरी हुई "ना" में भी भिक्षा मिल जाती थी।

हिन्दू धर्म के प्रथम वेद ऋग्वेद में कहा है, "बुजूर्गों को नमस्कार, छोटों को नमस्कार, युवाओं को नमस्कार, वृद्धों को नमस्कार, हम सामर्थ्यवान और देवपूजक बनें।" हे देवगण, मैं अपने से बड़ों का हमेशा सम्मान करूँ।

वास्तव में जहाँ नमस्कार है वहाँ विनय है। जैन धर्म के नमस्कार महामंत्र में "नमो" शब्द हर एक पद से जुड़ा हुआ है। वह विनय का कितना बड़ा महिमा गान है।

हर एक धर्म में नमन, नमस्कार या वंदन की बात करके विनय की ही महत्वता बताई गई है, वह चाहे हिन्दू धर्म हो, जैन धर्म हो या बौद्ध धर्म हो।

इसी विनय की बात करते हुए इसु ख्रिस्त ने अपने शिष्यों से कहा, "मैंने प्रभु और गुरु होने के बावजूद भी आपका पादप्रक्षालन किया तो आप सभी को भी एक-दूसरे के पैर धोने चाहिए। मैंने आपको उदाहरण दिया कि जैसा मैंने

आपके साथ किया, वैसा ही आप औरों के साथ करो। इसु ख़िस्त के "न्यू टेस्टामेन्ट" के ये वचन, विनय के व्यवहारिक पहलू को प्रकट करते हैं। किश्चियन धर्म के धर्मग्रंथ "न्यू टेस्टामेन्ट" में उन्होंने विनय की बात कही है। वे कहते हैं कि "सभी का आदर करो, भाईयों के साथ प्रेम रखो, परमेश्वर का डर रखो और राजा का सम्मान करो।" यहाँ पर विनय को व्यवहार में एक अंश के रूप में प्रकट किया गया है और अन्य के प्रति कैसा आदरभाव रखना चाहिए उसकी बात कही है। उस दृष्टि से देखें तो विनय सिर्फ सद्वर्तन के अर्थ में सीमित है।

इस्लाम धर्म अर्थात् शांति और सलामती। और इस्लामी अर्थात् अल्लाह के हुकम, इच्छा, मरज़ी और इश्वरीय आदेशों और निर्देशों के प्रति संपूर्ण आत्म-समर्पण करके इस जीवन में निरंतर शांति एवं सलामती प्राप्त करना।

हज़रत मोहम्मद सल्ल मानव समाज को समझाते हुए कहते हैं कि एक-दूसरे के प्रति विनय और प्रेमभाव ही अल्लाह की बंदगी है। अल्लाह के आदेशों का पालन करना ही उनके प्रति विनय दिखाता है।

विश्व में चीन के कन्फ्यूशियस धर्म ने व्यवहार का शिक्षण दिया है। उन्होंने प्रजा के आचरण पर ज़ोर दिया है। वे ऐसा मानते थे कि कल्याण की भावना को महत्व मिलना चाहिए। मानव स्वभाव के स्वाभाविक सद्गुणों पर विश्वास रखना चाहिए और अगर प्रजा के प्रति शासक अपना आचरण आदर्शरूप बनाएँगे तो राज्य स्वर्ग बन सकता है। कन्फ्यूशियस द्वारा स्थापित किए गए विद्यालय में तीन हज़ार विद्यार्थी अभ्यास करते थे। उनकी मृत्यु के पश्चात उनके पाँचसौ शिष्यों ने तीन सालों तक उनकी समाधि पर शोक प्रकट किया था। कन्फयूशियस धर्म का मुख्य उपदेश यह है कि मनुष्य को सभी के प्रति प्रेम और बंधुत्व की भावना रखनी चाहिए। दूसरों का जो व्यवहार आपको अच्छा नहीं लगता हो वैसा व्यवहार आपको भी दूसरों के प्रति नहीं करना चाहिए। कन्फ्यूशियस का उपदेश यह था कि प्रेम, न्याय, नम्रता, विवेक और सच्चाई इन पाँच गुणों का हमेशा ध्यान रखना चाहिए। इस संदर्भ में विवेक की बात करते हुए उन्होंने कहा है कि, "वृद्धों एवं अनुभवी लोगों को तुच्छ मत समझो और असहाय एवं कम उम्र के लोगों का अनादर मत करो।" व्यवहारिक विनय की पराकाष्ठा देखनी हो, तो आपको यह "ताओ" धर्म में देखने मिलेगी। इस धर्म के "दाओदिर जिंग" ग्रंथ में कहा है कि विनीतता उच्चता की नीव है।

शिष्य : "प्रभु आपने कहा कि विनय और विनम्रता बहुत ज़रूरी है, लेकिन मुझे तो यह सिर्फ दुर्बलता लगती है।"

गुरु : "हे पुत्र, इन सभी धर्मगुरुओं ने संपूर्ण जनसमाज को विनय के पाठ अलग-अलग तरह से सिखाए ही हैं। जो खुद विनयी बने हैं और जगत् को भी विनय के मार्ग पर चलने का निर्देश दिया है। तू विनय को निर्बलता मानता है तो परम पूज्य दादाश्री ने भी महात्माओं एवं मुमुक्षुओं से कहा है कि," जिनकी वाणी, वर्तन और विनय मनोहर होंगे वे लोकपूज्य बनेंगे।" अतः पुत्र! विनय वह निर्बलता नहीं है।

पुत्र अन्य के प्रति विनयपूर्वक वर्तन रखना, वे अपने अंदर अच्छे संस्कार विकसित करने के लिए ही है। विनय दुबर्लता नहीं है। "मैं बड़ा व्यक्ति हूँ," इस भाव से जब हम अन्य लोगों पर क्रोध करके अहंकारपूर्ण वर्तन करते हैं, तब हमें उन महान पुरुषों, धर्मगुरुओं और भगवान के हृदय की बात याद करनी चाहिए। सभी धर्मों में विनय को महत्व दिया गया है। जिस विनय से तुम्हारा अंतःकरण खिल उठता है, वही विनय की बात।"

दादाश्री के पुस्तक की झलक

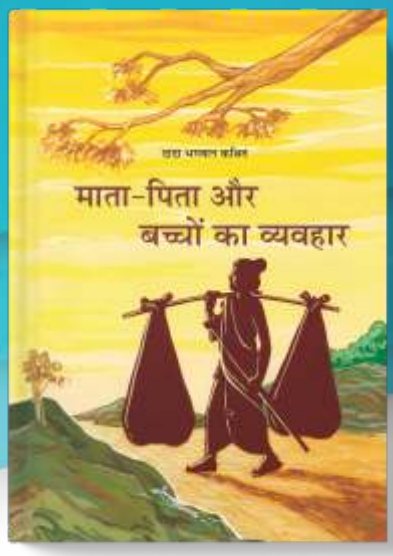

सेवा से प्राप्त करो माँ-बाप का राजीपा

प्रश्नकर्ता : इन सभी के माँ-बाप साथ में हैं और बच्चे हैं, तो यह सामाजिक जीवन उन्हें किस तरह से जीना चाहिए? माँ-बाप को कैसे जीना चाहिए, बच्चों को कैसे जीना चाहिए, यह एक बड़ी समस्या बन गई है, तो ऐसा कुछ रास्ता निकालना चाहिए ताकि उनकी समझ में आए?

दादाश्री : परस्पर सभी को सुख देने का प्रयत्न करें और दुःख तो देना ही नहीं है। सुख देने का ही प्रयत्न करें।

प्रश्नकर्ता : सुख की व्याख्या? सुख कैसे दें?

दादाश्री : माँ-बाप को अच्छा लगे ऐसा व्यवहार करे। खुद उनके अधीन रहना पड़ेगा। अगर यह ज्ञान होगा न, तो उसका आत्मा अलग होता जाएगा। बच्चे बाप के अधीन बर्ताव करे, बाप के कहे अनुसार। अच्छा न लगे फिर भी बाप के अधीन बर्ताव करे। फिर अगर सोचे तो उसे शांति लगेगी, अंदर सुख लगेगा, अगर उल्टा नहीं चलेगा तो। वह सुख कहाँ से आया? तो कहता है यह पराधीन था, वह दुःख ही था। फिर स्वाधीनतापना का सुख अंदर उत्पन्न होगा।

प्रश्नकर्ता : स्वाधीनतापना का सुख कैसे उत्पन्न होगा?

दादाश्री : बाप के कहे अनुसार चलने लगे। खुद को लगेगा कि यह परवशता है, लेकिन बाद में उसमें सुख लगेगा।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् माँ-बाप के कहे अनुसार करना चाहिए, यह बात पक्की हो गई।

दादाश्री : करना ही चाहिए न! संसार इसी को कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् माँ-बाप का राजीपा प्राप्त करना चाहिए?

दादाश्री : माँ-बाप का राजीपा प्राप्त करना चाहिए, उसके लिए सब कुछ करना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : संसार में पहला फर्ज़ तो यही है न! माँ-बाप को मन-वचन-काया से किंचित्मात्र दुःख न हो, किसी भी प्रकार से वह पहली बात।

दादाश्री : सिर्फ माँ-बाप की प्रति ही नहीं, चाचा, मामा, फूफा, सभी के प्रति हर एक के प्रति। और बेटे-बहू के साथ "किस तरह से फर्ज़ निभाना" यह बाप को समझना चाहिए। सभी के साथ फर्ज़ निभाना है।

विनय-विवेक कभी भी नहीं तोड़ना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : ये सब समझ में आता है लेकिन फिर भी माँ-बाप के प्रति जो विनय-विवेक रहना चाहिए, वह ज़रा भी नहीं रहता।

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं करना चाहिए, यह गलत है। यह सौ प्रतिशत गलत है, नहीं चलेगा। उच्च विनयी वर्तन रहना चाहिए। माँ-बाप का उपकार कैसे भूल सकते हैं? उपकार भूलना नहीं चाहिए।

प्रश्नकर्ता : कई बार वे ऐसे शब्द बोल देते हैं कि मुझे बहुत आघात लगता है। फिर मुझे पूरे दिन घबराहट होती रहती है।

दादाश्री : यह नोंध (नोट डाउन) नहीं करना चाहिए, मदर जो भी बोलती है वह तो रिकार्ड बोल रही है। ज्ञानपूर्वक नोंध-वोंध करनी चाहिए। उनका विनय नहीं रखेगा, तो ऐसा यहाँ नहीं चलेगा। मार डाले तो मर जाना चाहिए लेकिन माँ-बाप का विनय-विवेक नहीं तोड़ना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : मैं एक्सेप्ट (स्वीकार) करता हूँ, बेटे के तौर पर मेरे विनय विवेक ठीक प्रकार के नहीं है। ऐसे संयोग आ जाते हैं कि बोल देता हूँ, मेरी इच्छा नहीं है फिर भी बोल देता हूँ। उनका प्रतिक्रमण भी करता हूँ फिर भी कभी-कभार बोल देता हूँ।

दादाश्री : तुरंत माफी माँग लेनी चाहिए। बोल दिया, लेकिन अपना "ज्ञान" हाज़िर हो जाता है। कुछ भी गलती हो गई तो तुरंत माफी माँग लेनी चाहिए कि ऐसा बोल दिया, गलती हो गई। मम्मी से कहना चाहिए कि ऐसी गलती वापस नहीं करूँगा। यह तो मुझे भी बुरा लगेगा। हमारी तालीम ऐसी होगी क्या? मुझे ऐसा लगेगा। बाहर वालों को भी तकलीफ नहीं देनी है तो ये सभी तो घर के हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा के आज्ञांकित हो उनके घर का वातावरण तो प्रफूल्लित ही रहना चाहिए। लेकिन यह तो कहता है कि उसके दिमाग़ पर हमेशा बोझ रहता है।

दादाश्री : वह तो अभी विनय धर्म की बात कर रहा है। तुझे विनय धर्म कैसा रखना चाहिए? तू क्या कहता है?

प्रश्नकर्ता : ठीक है, विनय तो रहना ही चाहिए।

दादाश्री : बाहर भी रहना चाहिए, तो घर में तो कैसा रहना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : आदर्श रहना चाहिए।

दादाश्री : इसलिए अब तेरे मुँह से शब्द निकल जाते हैं उस बात पर से कह रहे हैं। लेकिन उसके पीछे जागृति, अपना ज्ञान है इसलिए तुरंत माफी माँग लेनी चाहिए ताकि उन्हें दुःख न लगे।

उल्टी पतीली

शरण्य मुनि विहार करते-करते धनज नगरी, जो कि विद्या-हीन लोगों की नगरी के नाम से प्रसिद्ध है, वहाँ पहुँचते हैं। उन्हें यह सुनकर आश्चर्य होता है कि इस नगरी की कोई भी व्यक्ति किसी से भी विद्या प्राप्त नहीं कर सकती।

मुनि श्री रत्नत्रय शेठ के घर भिक्षा लेने पहुँचते हैं। उसी समय शेठ का पुत्र विद्याश्रम से वापस आता है और शेठ से कहता है, "गुरुजी से तो अच्छा मुझे आता है। उन्हें तो चलना भी नहीं आता।" अपने अपंग गुरु की अवगणना करते हुए रत्नत्रय पुत्र अवकाश ऐसे शब्द बोलते हुए घर में प्रवेश करता है। मुनि श्री को लगता है कि जो गुरु का विनय नहीं कर सकता उसके घर से मैं भिक्षा नहीं लूँगा। ऐसा सोचकर वे मच्चु मोची के द्वार पर जाते हैं, मच्चु के पिता उसे दुकान की सामग्री के बारे में मार्गदर्शन दे रहे हैं लेकिन मच्चु अपने पिता से कहता है, अगर मुझे आपके कहे अनुसार ही करना पड़ेगा तो फिर आप ही दुकान चलाइए।" मुनि वहाँ से भी चल पड़े। आगे जाकर नागर नर्तकी का घर आता है। मुनि श्री को लगा कि अपने गुरु के विनय में रहकर ही नर्तकी इतना अच्छा नृत्य सीखी होगी, ऐसा सोचकर मुनि श्री उसके द्वार पर भीख माँगते हैं। अपनी सहेली के साथ बातें करते हुई नर्तकी मुनि श्री को भिक्षा देने आती है। उसी समय उसकी वरिष्ठ नर्तकी तारा उसके घर पर आती है और वह मुनि श्री को प्रणाम करके नागर से कहती है कि दूसरे नृत्य की तैयारी करने में वह उसकी मदद करेगी, ऐसा कहकर वह चली जाती है। लेकिन नागर नर्तकी तारा के लिए अपशब्द कहती है।

"गुरुजी के बजाय तो मुझे आता है। उन्हें तो चलना भी नही आता।"

मुनि श्री ने ली हुई भिक्षा को पात्र में से गिरा देते हैं। अब मानो शरण्य मुनि भिक्षा के बजाय विनय ढूँढ रहे हों ऐसे धनज नगरी के हर एक घर में जाकर खड़े रहते हैं और हर एक घर में अविनय का अंश मिलने पर वापस आ जाते हैं। कोई भाई का, बहन का, माता का, पिता का, गुरु का, बुज़ुर्गों का, तो कोई पड़ोसियों का, संतो का तो कोई मित्र का अविनय करता हुआ ही पाया जाता है।

पूरे दिन घूमकर मुनि श्री अंत में एक पेड़ के नीचे ध्यान करने बैठते हैं। सुबह होते ही मुनि श्री ने गाँव में ढ़िंढ़ोरा पीट दिया कि जो भी कोई मेरी पतीली में घी, छाछ, दूध, खाना, कुछ भी भर देगा उसे मैं विद्या दूँगा। यह नगरी विद्याहीन के कलंक से मुक्त हो जाएगी। सभी ने सोचा कि कलंक तो मिटेगा और हमारी नगरी अन्य कारणों से पछात रह गई है उसमें भी आगे आएगी। चलो, सिर्फ मुनि का एक पात्र ही तो भरना है।

शरण्य मुनि पतीली उल्टी करके बैठ गए। जैसे ही लोग पतीली में कुछ डालने लगते तो मुनि पतीली उल्टी कर देते। पतीली में थोड़ा सा कुछ हो वह भी उल्टी करने से गिर जाता था। मुनि का ऐसा व्यवहार देखकर लोगों को लगा कि मुनि का दिमाग़ खराब हो गया है। विद्या देने के बहाने वे सभी का नुकसान कर रहे हैं। मुनि ने फिर से कहा, "आप लोगों में हिंमत है, तो मेरी पतीली भरकर दिखाओ।" कुछ लोगों के अहंकार को ठेस लगी और उन्होंने तय किया कि मुनि की पतीली भरकर ही रहूँगा। लेकिन कोई कुछ नहीं कर सका।

रत्नत्रय सेठ के पुत्र अवकाश ने यह देखा कि मुनि पात्र उल्टा करके कह रहे हैं कि इसे भर दो। ऐसे थोड़ी भर सकते हैं? लाओ, मैं उन्हें समझाता हूँ कि पात्र सीधा करिए। अवकाश ने मुनि से कहा, "मुनि श्री आपका पात्र सीधा करीए तो मैं उसमें मीठई डाल सकूँगा।" मुनि ने पात्र उल्टा ही रखा। अवकाश पतीली सीधी करके मीठई रखने लगा तो मुनि ने पात्र उल्टा कर दिया। मुनि के ऐसे खराब व्यवहार से तंग आकर अवकाश ने ज़ोर से कहा, "मुनि, पात्र सीधा करिए, पतीली उल्टी है।"

यह सुनकर मुनि ने कहा, "आप सभी भी आपकी पतीली सीधी करिए। उल्टी है..." सब स्तब्ध रह गए। "हमारी पतीली उल्टी?"

मुनि श्री ने स्पष्ट किया कि जैसे पतीली उल्टी थी तो उसमें कुछ भी नहीं भर सकते, उसी तरह आपको जिससे सीखना है, समझना है या कुछ भी प्राप्त करना है तो उसके पास पतीली सीधी रखनी पड़ेगी। विनय वह सीधी पतीली है अगर उल्टी करोगे, अविनय करोगे तो पतीली में से सब गिर जाएगा।

माता-पिता, भाई-बहन, दोस्तों, गुरु या बुज़ुर्गों या किसी से भी कुछ सीखने का एक ही तरीका है, "विनय।" उनका ज्ञान प्राप्त करने के लिए पतीली जितनी सीधी रखेंगे उतना मिलेगा। जिसकी पतीली टेढ़ी या उल्टी होगी उसका उतना गिर जाएगा।

विनय के फायदे

विनय क्यों करना चाहिए? उससे हमें क्या फायदा होगा? अविनय करने से क्या हो जाएगा? ऐसे अनेक सवाल हमारे मन में उठना स्वाभाविक है... इन सवालों के जवाब जानने के लिए चलो, हम यह लेख पढ़ें।

हम जिस व्यक्ति का विनय करेंगे उसका आशीर्वाद हमें मिलेगा।

विनय करने से जीवन आनंदित बन जाएगा।

विनय करने से हमारा काम आसान बन जाएगा और हमें सम्मान मिलेगा।

विनय करने से सिन्सियरिटी बढ़ेगी।

जिनका विनय करेंगे उनका राजीपा हमें मिलेगा।

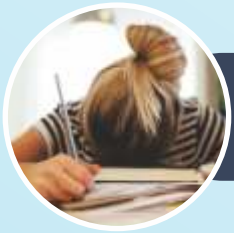

विनय करने से काम करने में थकान महसूस नहीं होगी और परिणाम भी अच्छा आएगा।

विनय करने वाली व्यक्ति सभी की प्रिय बन जाएगी और उसे सभी के साथ अभेदता लगेगी।

जिनका विनय करेंगे वह व्यक्ति भी हमारी सहायता करेगी जिससे हमारे अंदर पॉज़िटिविटी बढ़ेगी।

अविनय से नुकसान

टीचर का अविनय करने से हमारा रिज़ल्ट अच्छा नहीं आएगा।

अविनय करने से सभी के सामने हमारी छाप खराब पड़ेगी।

जिनका अविनय करेंगे उनका राजीपा हमें नहीं मिलेगा।

हम जिस व्यक्ति का विनय नहीं करेंगे तो वह व्यक्ति भी हमारा विनय नहीं करेगी।

जिस व्यक्ति का हम विनय नहीं करेंगे उस व्यक्ति के और हमारे बीच मतभेद होगा।

दूसरों का अविनय करने से हमारे काम में भी अंतराय आएँगे।

Q&A

प्रश्नकर्ता : विनय कैसे टूटता है?

आप्तपुत्र : हमारे मान, हमारे अहंकार इतने बड़े हो गए हैं, इस बारे में दादा कहते हैं कि मान से विनय टूटता है और अहंकार से परम विनय चूक जाते हैं। इसलिए वास्तव में तो हर एक में कुछ पॉज़िटिव देखकर उसकी कदर करेंगे तो उसमें जो गुण होगा वह हमारे में भी प्रकट होगा। हमारी दृष्टि उस तरफ रखनी चाहिए कि हर एक में कौन सा पॉज़िटिव है अर्थात् पॉज़िटिव देखना है। पॉज़िटिव देखने से अहंकार लघु बनेगा और अहंकार लघु बनने से अपने आप मान टूटेगा और अपने आप विनयी बनेंगे। ऐसे ही हर एक के साथ एडजस्ट होंगे न... अगर तुम्हें अपनी मम्मी के साथ एडजस्टमेन्ट लेना पड़े तो तुम्हें अपने अहंकार को नीचे लाना पड़ेगा तभी तुम अपनी मम्मी के साथ एडजस्ट हो सकोगे। ऐसा करने से बहस नहीं होगी और तुम मम्मी के विनय में रहोगे। वे उम्र में और हर एक बाबत में हम से बड़ी हैं इसलिए हमें उनकी बात सुननी चाहिए। तुम अगर सोचोगे कि मम्मी कहाँ ज्यादा पढ़ी-लिखी हैं, इंग्लिश कहाँ आता है, कम्प्यूटर भी नहीं आता, इस प्रकार से अगर कमान छटक जाए और तरह-तरह से इस प्रकार के अहंकार रखने से, ऐसे मान से विनय टूटता है। मैं बहुत होशियार हूँ ऐसा लगेगा... लेकिन इससे मम्मी का विनय टूटेगा। मम्मी के और अन्य लोगों के दोष देखने से भी विनय टूटेगा और अगर किसी का भी दोष नहीं दिखेगा तो विनय में रह सकेंगे। एडजस्ट होने के लिए हमें हमारे अहंकार को नीचा लाना पड़ेगा, तभी एडजस्टमेन्ट ले सकेंगे। अन्य लोगों के साथ एडजस्ट एवरीव्हेर होने से भी मान टूटेगा। इसीलिए मुझे सभी के साथ एडजस्ट होना है लेकिन लोगों को मेरे साथ एडजस्ट नहीं करना पड़े ऐसा भाव रखना चाहिए।

अविनय

कहाँ कहाँ करते हैं।

इच्छा-अनिच्छा से भी हम से कई बार दूसरों का अविनय हो जाता है, जिसका हमें कई बार पता भी नहीं चलता। तो चलो, देखें कि हम कहाँ-कहाँ विनय चूक जाते हैं।

टीचर्स

जब स्कूल या कॉलेज में टीचर हमारी किसी भी परिस्थिति को समझे बिना हमारा अपमान कर दे। हमें पनिशमेन्ट दे, तब हम से अविनय हो जाता है।

मम्मी

जब मम्मी अच्छी (सही) सलाह दे, तब हम मोबाइल और हमारे काम में मशगूल रहें, मम्मी को इग्नोर करें, उनकी बात न सुनें, हमें जो करना है वही करें तब हम से मम्मी का अविनय हो जाता है। हम अपनी मर्जी के मुताबिक काम करवाने के लिए मम्मी-पापा के सामने बोलकर अविनय करते हैं।

पेरेन्टस् मिटिंग में जब मम्मी हमारे साथ आए और मेडम इंग्लिश में बात कर रही हो तब मम्मी की समझ में कुछ नहीं आए तब हम मम्मी को ऐसा वैसा कहकर उसका अविनय करते हैं।

पड़ोसी

जब हमने कुछ गलत काम नहीं किया हो फिर भी पड़ोसी हमारे घर आकर हमारी मम्मी से कहे कि आपकी बेटी ने ऐसा किया और वैसा किया लेकिन वास्तव में हमने ऐसा कुछ किया ही नहीं हो तब ज़ोर से बोलकर पड़ौसी का अविनय कर देते हैं।

अविनय से विनय की ओर

हर एक समर कैम्प के बाद रिद्धि एक नए निश्चय और नई समझ के साथ घर आती थी। उस समझ को अपने जीवन में उतारने का वह पूरा प्रयत्न करती थी।

इस बार समर कैम्प से आने के बाद दूसरे दिन सुबह रिद्धि ने मम्मी के पैर छूए। यह देखकर घर में सभी को आश्चर्य हुआ। पापा ऑफिस जाने लगे तो उनके भी पैर छूए। अब बड़ी बहन से रहा नहीं गया तो वह ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगी और रिद्धि के नए वर्तन का मज़ाक उड़ाने लगी। रिद्धि ने भी दीदी की मज़ाक को मज़ाक समझकर ही कहा कि "अब से मैं रोज़ मम्मी-पापा के पैर छूऊँगी। तुझे जितना हँसना है उतना हँस। वैसे भी बड़े किसी काम के नहीं, यह कहावत तेरे लिए ही है।" दोनों बहनों ने एक-दूसरे से मज़ाक-मस्ती की और इतने दिन समर कैम्प में क्या किया। और घर में क्या-क्या हुआ, उस बारे में बातें की। दीदी को रिद्धि में आने वाले परिवर्तन से बहुत हँसी आ रही थी।

दीदी ने रिद्धि से पूछा कि, "समर कैम्प" में ऐसा तो क्या हो गया कि अचानक इतना बदलाव आ गया? रिद्धि ने उसके इस सवाल को अनसुना कर दिया।

अब से रोज़ सुबह जैसे ही पापा का ऑफिस जाने का समय होता उसी समय दीदी नास्ता करते हुए रिद्धि को आवाज़ लगाती, "अरे, रिद्धि देख, पापा ऑफिस जा रहे हैं, तुझे पैर नहीं छूने क्या?" दीदी की आवाज़ सुनकर रिद्धि दौड़कर आती और पापा के पैर छूकर दीदी को "थैंक यू" कहती।

अब तो यह दिनचर्या बन गई थी। जैसे-जैसे दिन बीतते गए वैसे-वैसे दीदी ने रिद्धि का मज़ाक उड़ाना कम दर दिया।

एक दिन मामा-मामी घर पर रूकने के लिए आए। रिद्धि को मम्मी-पापा के पैर छूते देखकर वे बहुत खुश हुए। उन्होंने रिद्धि को आशीर्वाद देते हुए कहा कि "बहुत अच्छा बेटा, ऐसी अच्छी समझ से बहुत आगे बढ़ो।" यह देखकर दीदी ने सोचा कि "यह छोटी है" फिर भी रोज़ मम्मी-पापा के पैर छूती है। हाँ, थोड़ी शैतान और जिद्दी है। पहले तो कभी-कभी मम्मी-पापा को सामने जवाब देती थी लेकिन अब तो बहुत अच्छा वर्तन करती है। किसी का अविनय नहीं करती। अगर वह छोटी होकर भी मम्मी-पापा के पैर छूती है तो मैं तो उससे बड़ी हूँ। भले ही शायद मैं उसकी तरह न कर पाऊँ लेकिन शुरुआत तो करनी चाहिए। हररोज़ नहीं तो जब-जब याद आए तब मैं भी मम्मी-पापा के पैर छूने की शुरुआत करूँगी।"

ऐसा सोचकर दूसरे दिन सुबह उठकर दीदी ने भी मम्मी-पापा के पैर छूए। यह देखकर पास वाली किरण मौसी दौड़कर आई, "क्या बात है अरुणा बहन, आपके घर में तो एक के बाद एक सभी सयाने होते जा रहे हैं, क्या बनाकर खिलाती है कि इतना अच्छा परिवर्तन आने लगा? ज़रा मुझे भी वह रेसिपी देना।

इस बात पर सब हँसने लगे...

लेकिन पापा सच में सोच रहे थे कि ऐसा परिवर्तन कैसे आ गया? रिद्धि ने तो शायद समर कैम्प में सीखा होगा लेकिन दीदी??

चलो जानें दादाश्री का इस बारे में क्या कहना है?

ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि से

विनयी लोगों को देखने से आएगा विनय

विनय से तो मनुष्य की शोभा है। अभी अगर उद्धताई करने लगे कि "मैं कलेक्टर हूँ" और ऐसा वैसा... तो लोग उसे "पागल, घनचक्कर है ही कहेंगे।" यहाँ संसार में भी उद्धता से पेश नहीं आना चाहिए। जबकि ज्ञानी पुरुष तो पूरे ब्रह्मांड के उपरी कहलाते हैं। वे उद्धताई नहीं करते। वे तो बालक जैसे होते हैं। यहाँ तो थोड़ा बड़ा होने के बाद कलेक्टर या अफसर बन गया तो गर्व करता है, उसे उद्धताई कहते हैं।

बिना विनय वाला व्यक्ति तो व्यक्ति ही नहीं कहा जाता। परम विनय तो अलग चीज़ है लेकिन विनय रहना चाहिए। हमारी हरएक पुस्तक में यह लिखा हुआ है, इसकी कीमत समझ में आए तो भी बहुत हो गया।

प्रश्नकर्ता : विनय लाने के लिए प्रयत्न तो करना पड़ेगा न, समझना पड़ेगा न?

दादाश्री : प्रयत्न नहीं करना हैं, सिर्फ देखना है। यहाँ आकर आपको बैठे रहना है और विनयी लोगों का वर्तन देखते रहना है। देखने से विनय आएगा। आसपास देखें कि कोई बात नहीं कर रहा है, तो हमारे अंदर भी विनय आएगा और हमें भी बात नहीं करनी चाहिए, अर्थात् देखने से विनय आएगा, सीखना नहीं है, प्रयत्न भी नहीं करना पड़ेगा। विनय वाले को देखने से ही इम्प्रेशन पड़ेगा। यह विनय, परम विनय सब इम्प्रेशन (छाप) है। हमारे यहाँ कायदा नहीं है, नो लॉ लॉ।

ज्ञानी पुरुष का परम विनय

"परम विनय" शब्द सुनते ही नीरू माँ की याद आती है। 2004 में राजकोट में जन्म जयंती थी और टी.वी. पर सत्संग आता था इसलिए नीरू माँ को सब पहचानते थे, दादा को कोई नहीं पहचानता था। दादा की जन्म जयंती थी और दादा के पोस्टर लगाने थे तो हम सभी को लगता था कि टी.वी. में तो लोग नीरू माँ को देखते हैं और पोस्टर हम दादा के लगाते हैं। अगर दादा के पोस्टर के साथ नीरू माँ का पोस्टर लगाएँगे तो लोग जल्दी कनेक्ट होंगे।

यानी सर्कल में जल्दी जुड़ेंगे या टी.वी. पर सत्संग का लाभ लेंगे, इसलिए हमने थोड़े पोस्टर तो लगा दिए थे। फिर मैं था, डिम्पल भाई थे, संजय भाई थे, हम सभी ने एक घंटे तक नीरू माँ का दिमाग़ चाटा कि नीरू माँ आपका पोस्टर भी लगाने दो। लोग आपको पहचानते हैं। ज्यादा लोग ज्ञान प्राप्त कर सकें इसलिए हम ये सब कर रहे हैं।

इतना कहने पर भी नीरू माँ तो मना ही कर रहे थे। घंटे- दो घंटे तक कहने के बाद नीरू माँ ने कहा कि "ठीक है, पोस्टर लगा सकते हो लेकिन एक ही पोस्टर और वह भी मैं तय करूँगी कि कौन सी फोटो लगाना है। फिर उन्होंने कहा कि दादा, नीरू माँ को आशीर्वाद दे रहे हैं वह फोटा लगा सकते हैं। हम तो दादा के आश्रित हैं। दादा ही मुख्य हैं, जिन्हें स्वयं प्रकट हुआ हो वह ज्ञानी तो अजोड़ ही रहते हैं और हम उनके आश्रित है। इससे हमें बहुत अहो भाव हुआ। दादा नहीं हैं और दादा ज़िम्मेदारी सौंपकर गए हैं इसलिए उनकी आज्ञा में रहकर पूरी करेंगे लेकिन दिल में तो दादा ही हैं। नीरू माँ एक सेकन्ड के लिए भी परम विनय में से विनय में नहीं गए हैं, ऐसा ज़बरदस्त परम विनय।

2005 में भावनगर में जन्म जयंती थी इसलिए हमने नीरू माँ का फोटो लगाया। नीरू माँ ने यह देखकर हमें इतना डाँटा कि, किसे पूछकर लगाए? हमने कहाँ, "नीरू माँ आपने ही तो कहा था। नीरू माँ ने कहा, मुझे तो याद भी नहीं है।"

उनका फोटो लगाने की उन्हें इच्छा ही नहीं थी। नीरू माँ कहने लगे कि मेरा फोटो नहीं, दादा की ही लगानी चाहिए और वह अंतिम जन्म जयंती थी। फिर तो नीरू माँ का देहविलय हो गया, फिर उनके द्वारा कहा गया यह एक ही फोटो रखा जाता है। नीरू माँ अपना फोटो किसी के घर में भी नहीं रखने देते थे, दादा की फोटो रखने को कहते थे। पूज्यश्री को भी उनकी फोटो रखवाना अच्छा नहीं लगता। वह कहते हैं कि जो है सब दादा ही हैं। वे 356 से 358 तक पहुँच गए थे। इसलिए उनका निदिध्यासन करने से आपका काम बनेगा, हमें पूजाने की कामना नहीं है और अपना मान, नाम, या कीर्ति की पड़ी नहीं है और चाहिए भी नहीं। नीरू माँ यह सब पूर्वजन्म का लेकर आए थे, ऐसा हमें लगता है। दादा से मिलने के पहले ही नीरू माँ को एक बार दादा सपने में आए और आकाश में उन्हें बहुत ऊपर उठा रहे थे, सपने में ही नीरू माँ को लगा कि अगर मैं ऊपर से नीचे गिर जाऊँगी तो? सपने में ऐसा सोचते ही वे मछली बन जाती है। इसलिए दादा से मिलने के पहले ही उन्होंने तय किया था कि मुझे जो भी महा पुरुष मिले, जो मुझे उपर ले जा रहे हों तो उनके प्रति मैं कभी भी शंका नहीं करूँगी। मिलने से पहले ही उन्होंने यह तय कर लिया था। इसके बाद पूरी ज़िंदगी उन्हें एक भी विकल्प नहीं हुआ या एक भी दोष नहीं देखा है।

Youth
.dadabhagwan.org

WELCOME TO
INSPIRATIONAL WORLD OF YOUTH

youth.dadabhagwan.org

We are today's Youth. We want to change the world. We want to be better people. We seek a deeper understanding of ourselves and the world around us. And so this website is for us. There are things we all want to learn about, Spiritual guidance for our everyday challenges, topics relevant to our personal growth and much more. Together, let us embark on a journey to achieve our highest potential, and become instruments of love, wisdom and inspiration to those around us.

विनय या अविनय?

सिर्फ बत्तीस वर्ष की वय में जगत् विजेता बनने वाले शहेनशाह सिकंदर ने प्रसिद्ध दार्शनिक एरिस्टोटल से ग्रीक साहित्य, विज्ञान, होमर के महाकाव्य, वीर कथाएँ वगैरह का अभ्यास किया था।

गुरु एरिस्टोटल और शिष्य सिकंदर एक बार घने जंगल से गुज़र रहे थे। रास्ते में एक नाला आया जिसमें बाढ़ के कारण पानी बहुत तेज़ी से बह रहा था। नाला बहुत गहरा था, गुरु एरिस्टोटल उस नाले में प्रवेश करना चाहते थे, लेकिन सिकंदर ने उन्हें रोका और फिर गुरु-शिष्य के बीच नाला कौन पहले पार करेगा इस पर बड़ा विवाद खड़ा हो गया।

सिकंदर की हठ थी कि पहले वही नाला पार करेगा। दोनों के बीच थोड़े से विवाद के बाद गुरु को अपने शिष्य की बात को मानना पड़ा। सिकंदर ने पहले नाला पार किया और बाद में गुरु ने। नाला पार करके सामने पार पहुँचकर दोनों के बीच फिर से चर्चा होने लगी। महान चिंतक एरिस्टोटल ने कहा, "सिकंदर, मैं तेरा गुरु हूँ। मुझे आगे रहना चाहिए, तूने ऐसी हठ क्यों की? मेरी इज्जत क्यों नहीं की!

सिकंदर ने नम्रतापूर्वक गुरु से कहा, "गुरुदेव, ऐसा मत कहिए, क्या मैं आपकी बेइज्जती करूँगा? लेकिन नाला पहले पार करना मेरा कर्तव्य था।"

शिष्य की बात को बीच में ही रोकते हुए एरिस्टोटल ने कहा, "क्यों? ऐसा क्या था?"

सम्राट सिकंदर ने कहा कि, "गुरुदेव, एरिस्टोटल होंगे तो हज़ारों सिकंदर पैदा होंगे लेकिन बेचारा सिकंदर एक भी एरिस्टोटल नहीं बना पाएगा।"

जगत् विजेता सिकंदर के मन में अपने गुरु के प्रति कितना गहरा विनय था उसका अंदाज़ा यहाँ आता है।

व्यवहारिक दृष्टि से विनय को अनेक रूप से देख सकते हैं। खुद से अधिक गुणवान व्यक्ति का आदर करना, वह विनय का एक प्रकार है, तो विनय का दूसरा प्रकार यह है कि पूज्य के प्रति सदैव आदर रखना। जीवन में विनय व्यक्ति को प्रिय बनाता है। ऐसा कह सकते हैं कि विनय दिखाकर व्यक्ति सामने वाले का हृदय जीत लेता है। और इसीलिए कहा गया है कि "जो झूकता है, वह सभी का प्रिय बनता है।"

माथापच्ची

जवाब अंतिम पेज में मिलेंगे...

સુધી + maa =

J x 2 =

ફ + રવામાં =

AWAY =

6 =

ટ + Wahh.. =

પારડી - D =

+ No! =

V + =

ॐ =

6 E =

& =

Last =

પ + PLAY =

V + X =

થ + Yo! =

A + ટલે =

+ क्ष =

THAI =

वर्ष : ६, अंक : ८
अखंड क्रमांक : ६८
दिसम्बर २०१८

इस विनय धर्म की शुरुआत
हिन्दुस्तान से होती है।
हाथ जोड़ने से लेकर साष्टांग
प्रणाम करने में जो कुछ भी
किया जाता है, ऐसे अपार
विनय धर्म हैं। और अंत में
"परम विनय" आ गया
तो मोक्ष होगा।

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.